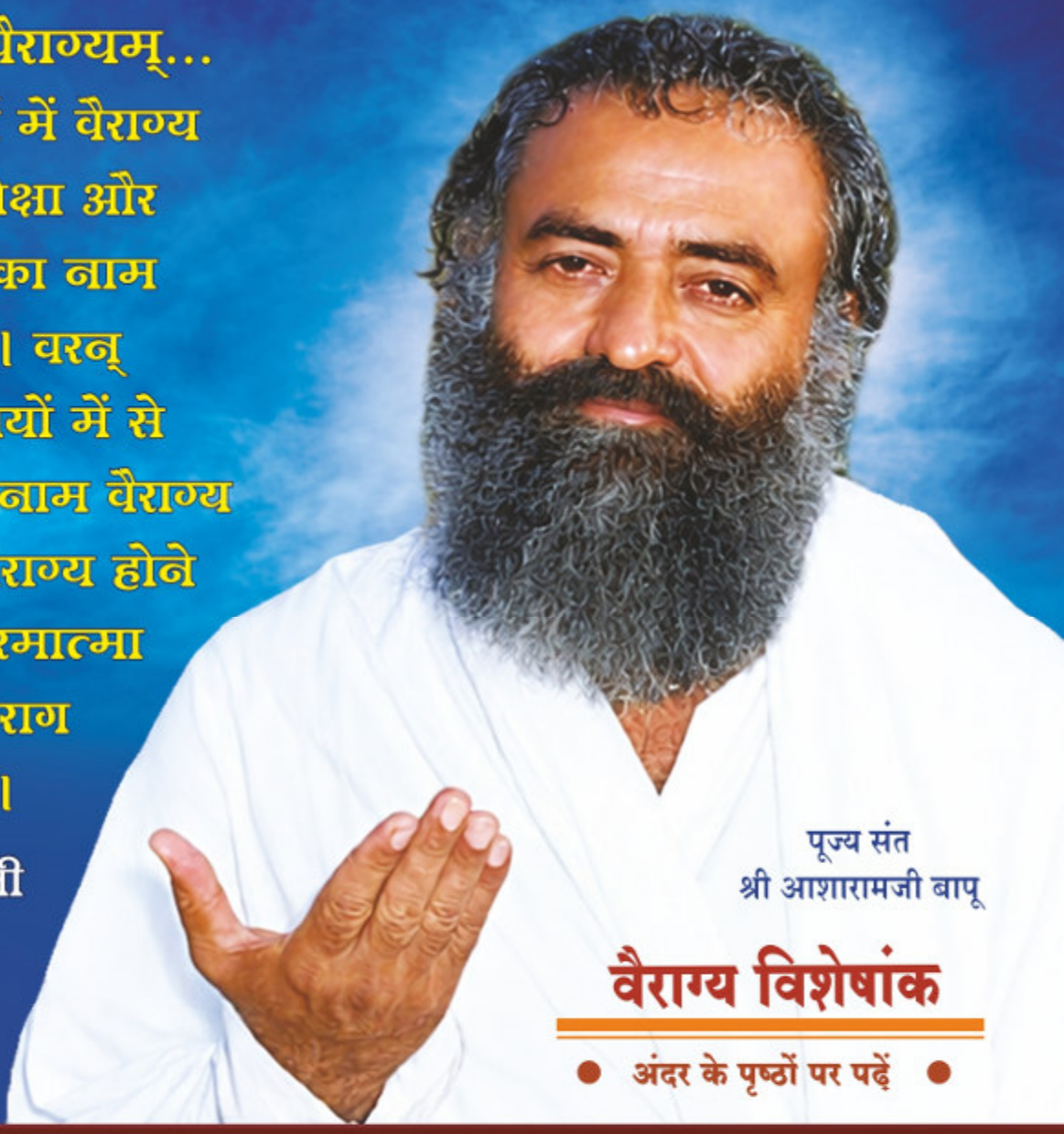
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ नवम्बर २०२६
वर्ष : ३६ अंक : ५ (निरंतर अंक : ४०७)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम्...
इन्द्रियों के अर्थ में वैराग्य करें । घृणा, उपेक्षा और द्वेषबुद्धि करने का नाम वैराग्य नहीं है । वरन् इन्द्रियों के विषयों में से राग हटाने का नाम वैराग्य है । संसार से वैराग्य होने लगता है तो परमात्मा में अपने-आप राग होने लगता है ।

- पूज्य बापूजी



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

वैराग्य विशेषांक

● अंदर के पृष्ठों पर पढ़ें ●



पत्नी के धोखे भरे व्यवहार से विरक्त हो राजा भर्तृहरि राजपाट छोड़कर संन्यास लेते हुए



गृहस्थ जीवन में प्रवेश के प्रथम दिन पति-पत्नी को हुआ वैराग्य



ऊँट पर लटकने से हुई बछड़ों की मृत्यु को देखकर मंकिजी को हुआ वैराग्य

आप ७ दिन में मरनेवाले हैं !

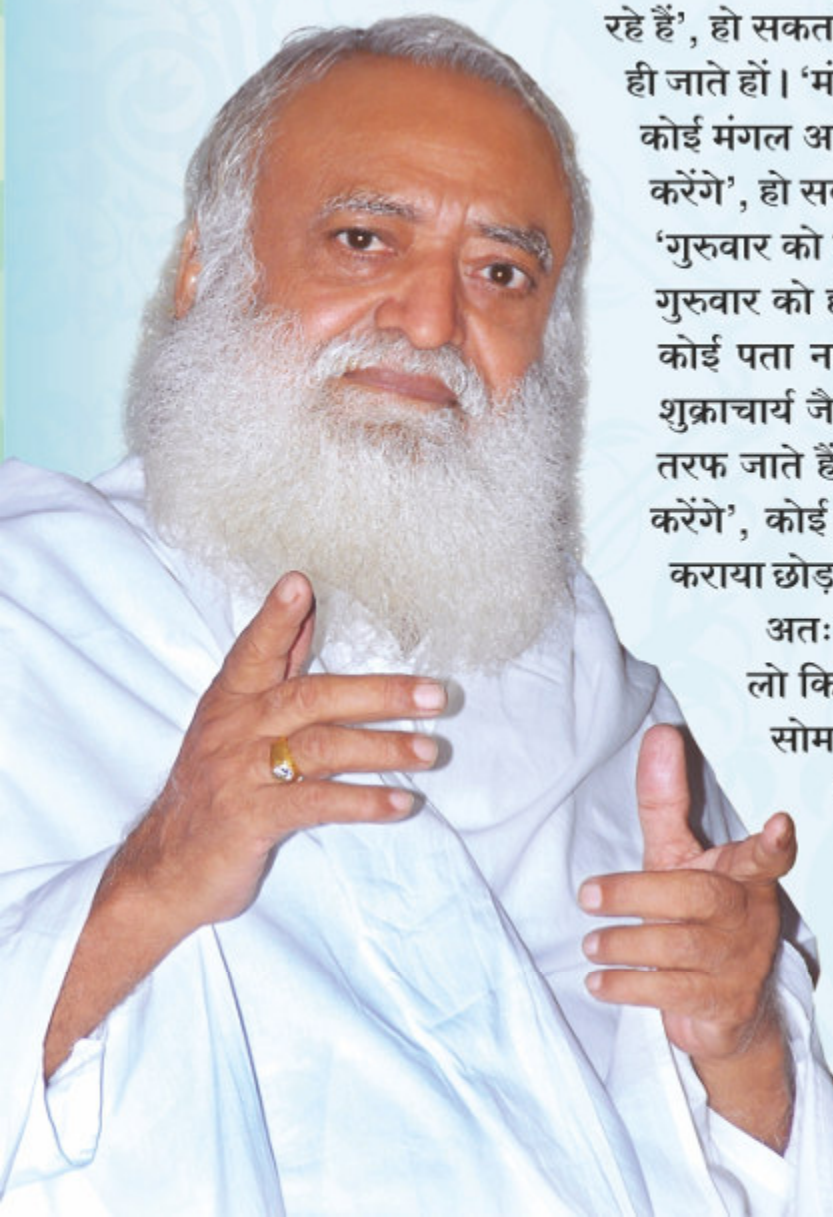
(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः...

यदि अनात्म वस्तुओं में मन को लगाया तो आप अपने-आपके शत्रु हो जाते हैं व छोटे हो जाते हैं और अनात्म वस्तुओं से मन को हटाकर आत्मा में लगाया तो आप श्रेष्ठ हो जाते हैं, अपने मित्र हो जाते हैं, बड़े हो जाते हैं। नानकजी तुमसे बड़े नहीं थे, कबीरजी तुमसे बड़े नहीं थे, महावीर और बुद्ध तुमसे बड़े नहीं थे, श्रीकृष्ण भी तुमसे बड़े नहीं थे, तुम्हारा ही रूप थे लेकिन वे सब बड़े हो गये, क्यों ? क्योंकि उन्होंने अपने में (अपने आत्मस्वरूप में) स्थिति की और आप लोग पराये में (अनात्म देहादि में) स्थिति करते हैं इसलिए आप मारे गये और वे लोग तर गये !

जो हो गया सो हो गया, समय बीत गया सो बीत गया परंतु अब बात समझ में आ गयी तो आप याद रखना कि ७ दिन में मरनेवाले हैं। सच बोलता हूँ कि ७ दिन के अंदर-ही-अंदर मौत है, उस मौत को सामने रखना कि आखिर कब तक ?



'कल के रविवार को छुट्टी मनायेंगे, खेलेंगे-घूमेंगे' पर एक रविवार ऐसा भी तो हो सकता है कि हम अर्थी पर चले जायें। 'सोमवार को हम फलाने यार से मिलने को जा रहे हैं', हो सकता है कि कोई ऐसा सोमवार हो कि हम श्मशान में ही जाते हों। 'मंगल को हम इससे मिलेंगे', हो सकता है ऐसा भी कोई मंगल आयेगा कि हम अर्थी से मिलेंगे। 'बुध को हम यह करेंगे', हो सकता है बुध को बुद्धू की नाईं हमारा शव पड़ा हो। 'गुरुवार को हम यह करेंगे, ऐश करेंगे, वह करेंगे', क्या पता गुरुवार को हम गुरु के द्वार जाते हैं कि यम के द्वार जाते हैं, कोई पता नहीं। 'शुक्र को हम यह करेंगे', अरे, शुक्र को शुक्राचार्य जैसे ज्ञान को पाते हैं कि शूकर जैसी योनियों की तरफ जाते हैं, कोई पता नहीं। 'शनिवार को यह करेंगे, वह करेंगे', कोई शनिवार ऐसा भी हो सकता है कि सब करा-कराया छोड़ के रवाना होना पड़े।

अतः सुबह उठो तो परमात्मा और मौत को याद कर लो कि क्या पता कौन-से दिन को चले जायेंगे ! आज सोमवार है, क्या पता इस देह का अंत किस सोमवार को हो जाय। आज मंगल है, क्या पता कौन-से मंगल को चले जायें। सच बोलता हूँ, कोई-न-कोई दिन होगा इनमें से, भगवान की कसम खा के बोलता हूँ। आप तो चतुर हैं, समझते हैं इसलिए मौत को और परमात्मा को - दोनों को सामने रखोगे तो फिर महान होने में देरी नहीं।

आत्मपद को पाये बिना दिक्कत-ही-दिक्कत है !

(योगवासिष्ठ महारामायण : निर्वाण प्रकरण, २०७वाँ सर्ग)

पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में श्री योगवासिष्ठ महारामायण का पाठ चल रहा है :

महर्षि वसिष्ठजी बोले : ''हे रामजी ! मैं चिदाकाशरूप हूँ । न मेरा कोई आकार है न मैं कभी उपजा हूँ और न मैं कभी मृतक होता हूँ । मैं नित्य, शुद्ध, अजर, अमर, सदा अपने स्वभाव में स्थित हूँ । मैं अनेक विकारों में भी एकरस हूँ । जैसे स्वप्न में बड़े क्षोभ होते हैं तो भी जाग्रत शरीर को स्पर्श नहीं करते कारण कि उसमें कुछ हुए नहीं, आभासमात्र हैं वैसे ही जगत की उत्पत्ति-प्रलयादि क्षोभ में आत्मसत्ता को स्पर्श नहीं होता अर्थात् वह क्षोभ से रहित सदा अनुभवरूप है । हे रामजी ! जिस पुरुष ने ऐसे अनुभव को नहीं पहचाना, जिससे सब कुछ सिद्ध होता है और उसे छुपाया है वह महामूर्ख और आत्महंता है - वह महा आपदा के समुद्र में डूबेगा ।''

पूज्य बापूजी : ''हाँ, जिससे सब कुछ सिद्ध होता है उस आत्मदेव को जिसने छुपाया वह महाहंता है, उसने महापाप किया है । इसलिए तो कितना भी पुण्य करते-करते भी कुछ-न-कुछ पाप रह जाते हैं और जन्म-मरण रह जाता है, दुःख रह जाता है क्योंकि उस आत्मदेव का अनादर किया । तीर्थ नहाया तो क्या झक मार ली ? डॉलर कमाया तो क्या झक मार ली ? उस आत्मदेव का घात किया तो महाहंता है । बहुत धन कमाकर सुविधापूर्ण जीवन बितानेवाले लोग कहते हैं : 'कोई दिक्कत नहीं, कोई दिक्कत नहीं...' दिक्कत-ही-दिक्कत रहेगी आत्मज्ञान नहीं पाया तो । 'कोई दिक्कत नहीं' ऐसा बोलते-बोलते दिक्कतों में ही जिंदगी पूरी कर रहे हैं । 'कोई दिक्कत नहीं, नो प्रॉब्लेम, नो प्रॉब्लेम...' प्रॉब्लेमों में तो पचे जा रहे हैं । 'नो प्रॉब्लेम, नो प्रॉब्लेम...' आदत पड़ गयी है, बकते रहते हैं । बड़ा भारी मौत का प्रॉब्लेम सामने खड़ा है, बोले : 'नो प्रॉब्लेम, कोई दिक्कत नहीं ।' आत्मसाक्षात्कार नहीं किया तो कब दिक्कत आ जाय कोई पता नहीं । यह मन की आदत है, मन भिन्न-भिन्न हैं तो आदतें भिन्न-भिन्न हैं लेकिन उनको जाननेवाला चैतन्य एक, उसमें जो टिक गया वह चैतन्यरूप है ।''

वसिष्ठजी : ''हे रामजी ! ऐसा शरीर (मनुष्य-जन्म) पाकर यदि आत्मपद न पाया तो फिर कब पाओगे ? जो आत्मपद से विमुख है वह वृक्ष आदि के जन्मों को पावेगा ।''

पूज्य बापूजी : ''हाँ, जो आत्मपद से विमुख है वह वृक्ष आदि योनियों को पायेगा तो दिक्कत हो जायेगी । मरेगा यह तो पक्की बात है फिर पेड़ बनेगा तो दिक्कत होगी, कुल्हाड़े लगेंगे । भैंस बनेगा तो भी दिक्कत होगी, पाड़ा बनेगा तो भी दिक्कत होगी । देवता बनेगा तो भी दिक्कत होगी, पुण्य-नाश हो के जाकर गिरेगा, फिर कोई खायेंगे, उसीकी जननेन्द्रिय के द्वारा गर्भ में जायेगा तो दिक्कत है न ? दिक्कतों से भरा हुआ है, बोले : 'कोई दिक्कत नहीं है, नो प्रॉब्लेम, नो प्रॉब्लेम ।' चारों तरफ प्रॉब्लेम है आत्मज्ञान के बिना ।''

वसिष्ठजी : ''जिसको अपने स्वरूप में अहं-प्रत्यय हुआ है उसको मानसी दुःख कभी नहीं स्पर्श करता । और जिसको आत्मा में अहं-प्रत्यय नहीं उसको शांति कदापि प्राप्त नहीं होती ।''

पूज्य बापूजी : ''हाँ, जिसको आत्मसाक्षात्कार नहीं हुआ उसको परम शांति कहाँ ? अब परम शांति नहीं है तो प्रॉब्लेमरहित

गीता ग्रंथ की सर्वोत्कृष्टता

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

गीता जयंती की, मोक्षदा एकादशी की बधाई हो ! स्वास्थ्य के लिए, बुद्धि व हृदय को पुष्ट करने के लिए गाय का दूध और परमात्मा को पाने के लिए गीता का ज्ञान है । भगवान कहते हैं :

गीता मे हृदयं पार्थ... 'गीता मेरा हृदय है ।' **गीता मे सारमुत्तमम् ।** 'गीता मेरा उत्तम सार है । मेरा सार तत्त्व गीता में है ।' **गीता मे ज्ञानमत्युग्रं...** 'गीता मेरा अति उग्र ज्ञान है ।' **गीता मे ज्ञानमव्ययम् ॥** 'गीता मेरा अविनाशी ज्ञान है ।' **गीता मे चोत्तमं स्थानं...** 'गीता मेरा श्रेष्ठ निवासस्थान है ।' **गीता मे परमं पदम् ।** 'गीता मेरा परम पद है ।' **गीता मे परमं गुह्यं...** 'गीता मेरा परम रहस्य है ।' गीता परम गुह्य खजानेवाली, गोपनीय रहस्य है । **गीता मे परमो गुरुः ॥** 'गीता मेरा परम गुरु है ।'



२० दिसम्बर : श्रीमद्भगवद्गीता जयंती पर विशेष

संसार की इतनी सारी भाषाओं में अगर कोई ग्रंथ है तो गीता है । छोटा-सा ग्रंथ है, ७०० श्लोक बस ! लेकिन किसी भी जाति, धर्म का व्यक्ति हो सबके लिए यह उपयोगी है, जीवन की तमाम गुत्थियाँ खोलने की कुंजियाँ गीता में छुपी हैं । भगवान वेदव्यासजी इस गीता ग्रंथ की प्रशंसा करते हुए कहते हैं :

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ॥

'जो स्वयं भगवान विष्णु के मुखकमल से निकली हुई है वह गीता अच्छी तरह कंठस्थ करनी चाहिए । अन्य शास्त्रों के विस्तार से क्या लाभ ?'

(गीता माहात्म्य)

गीता का अध्ययन करना ही कर्तव्य समझ लो, सार पाना सीख लो । गीता में बहुत सारी विद्याएँ हैं । साम्य विद्या है – कैसी भी परिस्थिति आये चित्त की समता बनी रहे । ईश्वरीय विद्या है – अंतरात्मा परमेश्वर की शरण जाने की रीत । जीव-ब्रह्म एकत्व विद्या है – आप देह को 'मैं' मानने की गलती करते हैं और जीने की वासना है, असलियत को नहीं जानते इसलिए ब्रह्म-परमात्मा से अलग हैं वरना ब्रह्म-परमात्मा और आत्मा एक है ।

जीवन में हौसला बुलंद रखो

गीता में भगवान कहते हैं : **युध्यस्व –** 'युद्ध करो !' अधर्म आक्रामक होता है और धर्म शांतिप्रिय, एकांतप्रिय होता है । आक्रामक लोग आक्रमण करते हैं और उससे कहीं कोई पिसा जा रहा है, मरा जा रहा है तो सज्जन लोग शांतिप्रियता के कारण 'चलो भई ! भगवान उनको सद्बुद्धि दें...', सब भगवान के हवाले करके खुद किनारा कर लेंगे ।' इससे आक्रामक लोग सफल हो जाते हैं और धार्मिक लोग बेचारे शोषित हो जाते हैं । गीता ने धार्मिक लोगों को शोषित होने से बचाने का रास्ता दिया है ।

गीता में सवाल यह नहीं था कि दुर्योधन जीतेगा कि पांडव जीतेंगे ? बल्कि सवाल यह था कि अधर्म जीतता है कि धर्म जीतता है ? आक्रामक दुर्योधन, आक्रामक अधर्म शांत धर्म को संन्यास के लिए बाध्य कर देगा तो आक्रामक अधर्म विजयी हो जायेगा । श्रीकृष्ण का सिद्धांत था कि 'धर्म आक्रामक भी होना चाहिए । अधर्म से दबे नहीं, अधर्म को दबोच दे ।'

गीता का उपदेश है **'युध्यस्व'** । अर्जुन ने जरा-सी ढीली बात कही तो श्रीकृष्ण कहते हैं :

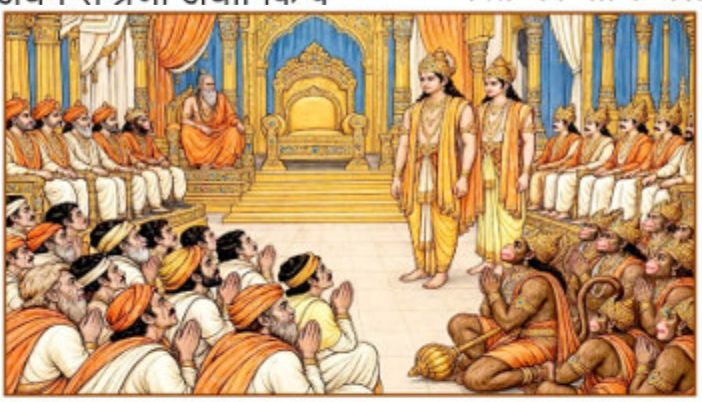
श्रीरामजी का स्वधाम-गमन

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

(पिछले अंक में आपने पढ़ा कि काल श्रीरामजी के पास आया और उनके राज्यकाल की पूर्णता का संदेश दिया । इसी बीच दुर्वासाजी के आगमन पर लक्ष्मणजी को श्रीरामजी के वचन के रक्षार्थ अयोध्या की रक्षा एवं स्वयं के मृत्युदंड के बीच कठिन निर्णय लेना पड़ा, जिससे श्रीरामजी गहन असमंजस में पड़ गये । **अब आगे...**)

धर्म के लिए लक्ष्मणजी की बलि

रामचन्द्रजी ने सभी मंत्रियों को बुलाया और गुरु वसिष्ठजी को आदर से बुलाकर सब वृत्तांत सुनाया । सभीने कहा कि ''प्रतिज्ञा का पालन न करने से अधर्म होगा । अधर्म से प्रजा अधार्मिक व दुःखी होगी और प्रतिज्ञा का पालन करने से लक्ष्मण की तो मृत्यु होगी पर धर्म की रक्षा होगी । अतः लक्ष्मण की बलि देना उचित रहेगा ।''



कैसा वज्रपात हुआ होगा ! रामजी ने भरे हृदय से कहा : ''लक्ष्मण ! अब तुम जाओ ।''

जाओ कहें उसके पहले ही लक्ष्मणजी ने हाथ जोड़े कि ''साधो ! आप कितने सीधे, कितने अच्छे हो प्रभु !''

यह कैसा है भाई-भाई का, स्वामी-सेवक का, राजा-मंत्रियों का, गुरु-शिष्य का व्यवहार ! लक्ष्मणजी सरयू के किनारे देह त्यागने गये । इन्द्रियों को मन में, मन को बुद्धि में और बुद्धि को परमात्म-चेतना में लगाकर धारणा करके प्राणायाम किये । जैसे साँप केंचुली छोड़ता है वैसे ही इस महायोद्धा, महासेवक, महाभ्राता लक्ष्मणजी ने शरीर का त्याग करने में संकोच नहीं किया । उन्होंने प्राणों को ब्रह्मरंध्र में स्थिर किया । इतने में इन्द्र अदृश्य रूप से आये और उन्हें सशरीर स्वर्ग में ले गये ।

पद-पद पर धर्म का आश्रय लेनेवाले श्रीराम के जीवन में भी विपरीत परिस्थितियाँ काल ले आता है तो आपके और हमारे जीवन में विपरीत परिस्थितियाँ आ जायें तो सिर कूट-कूट के ज्यादा विपरीत मत बनाओ । समय के साथ परिस्थितियाँ बदलती हैं और जो बदलने को राजी नहीं होता है उसे भी झक मार के बदलना पड़ता है ।

भरत को पता चला, वे आये । रामजी कहते हैं : ''भरत ! अब यह राज्य तुम सँभाल लो ।''

भरत बोलते हैं : ''प्रभु ! मेरे राम को विदाई देकर मैं अयोध्या में राज्य नहीं करूँगा ।''

भरत को साथ चलने की स्वीकृति दी और लव-कुश को राज्य दे दिया । फिर अयोध्यावासियों को रामजी बोले : ''मैं आपका बड़ा आभारी हूँ । आपने मुझे राज्योचित प्रेम, मान दिया और मेरी आज्ञाओं का पालन किया । अब हम आपसे विदा चाहते हैं ।''

विदाई की बातें सुनकर अयोध्यावासियों का दिल भर आया, आँखें भर गयीं, बोले : ''प्रभु ! हम आपके बिना नहीं रहेंगे । हमें भी आप साथ ले चलो ।''

''मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता ।''

आप अमानी रहकर औरों को मान देनेवाले कितने उदार प्रभु राम ! आपके चरणों में प्रणाम !

शत्रुघ्न को पता चला तो वे आये और साथ ले चलने की प्रार्थना की । रामजी ने स्वीकृति दी ।



विद्यार्थी संस्कार



उनको थोड़ी-सी घटना भी बड़ा प्रकाश दे देती है

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

एक व्यक्ति समुद्र-किनारे बैठा था, उछलती हुईं लहरें देख रहा था। उसने देखा कि नजदीक में ही एक व्यक्ति ने अपनी धोती, अँगोछा, तौलिया रखा और स्नान करने के लिए लहर में जरा गोता मारा। उसने गोता क्या मारा, लहर ने ही उसके अंदर गोता मार दिया, झपेटे में उसको ले लिया। लोग दौड़े परंतु दो मिनट बाद लोगों के हाथ में उसकी लाश आयी। जो व्यक्ति समुद्र-किनारे बैठकर समुद्र की हवाएँ खा रहा था, लहरों का आनंद ले रहा था उसने देखा कि 'क्या यही जीवन है ?' वह समुद्र-किनारे से अपने कार्यालय नहीं गया, अपने घर नहीं गया, कहीं टेलिफोन नहीं खटखटाया, चला गया, चला गया, चला गया... उन संत की, ज्ञान-वैराग्य के दाता ऐसे किन्हीं हनुमान की खोज में जो राम से मिला दें।



उस व्यक्ति ने किसीकी मृत्यु देखकर अपने को मरण के पहले अमर राम से मिला दिया। उसी बात की चर्चा में ४ व्यक्ति लगे। एक बोला : ''देखो भाई ! जब रंग लगता है तो लगता है। जिसका पुण्य उदय होता है उसको थोड़ी-सी घटना भी बड़ा प्रकाश दे देती है।''

दूसरा बोला : ''जीवन बदल जाता है... ये बातें करते हैं परंतु अपने को भी कुछ करना चाहिए।''

पहला : ''मैं तो ऐसा साधु बनूँगा कि तुम देखते रह जाओगे।''

दूसरे ने कहा : ''रहने दो - रहने दो, बड़े साधु बनने की बात कर रहे हो, साधु बनना कोई मजाक की बात है ? मैं साधु बन के दिखाऊँगा !''

पहला : ''मैं नहीं बनूँगा, तुम बन के दिखाओगे ?''

दूसरा : ''हाँ, देखना मैं साधु बनूँगा।''

तीसरे ने कहा : ''छोड़ो, खामखाह की बातें कर रहे हो। साधु बन के दिखायेंगे, साधु तो कई लोग बन गये।''

पहला बोला : ''नहीं-नहीं, साधु बनकर भी 'अला बाँधूँ, बला बाँधूँ, भूत बाँधूँ, प्रेत बाँधूँ, छू ! अथवा यह दे दे, वह दे दे...' ऐसा नहीं, मैं तो सच्चा साधु बनूँगा।''

चौथे ने कहा : ''सच्चा साधु ता गोपीचंद जैसा बनो तब पता चले।''

पहले ने कहा : ''मैं तो गोपीचंद जैसा ही बनूँगा।''

दूसरे ने कहा : ''मैं तो गोपीचंद का मामा भर्तृहरि बनूँगा।''

तीसरे ने कहा : ''रहने दो, गप्पें क्या हाँकते हो ?''

वे दोनों चल दिये। एक तो गोपीचंद को

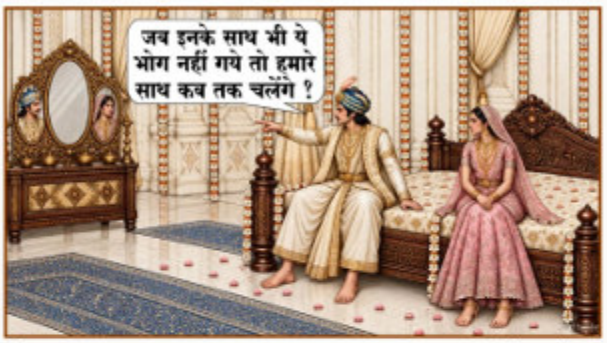
महासौभाग्यशाली घड़ियाँ...

विषय-भोगों के बीच भी जगा विवेक का दीया

(पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के सत्संग से)

एक खूब धनवान व्यापारी था। उसका एक-का-एक लड़का था। उसकी मँगनी करायी, शादी की। उस समय लड़का छोटा था। फिर बुलावा आया भगवान का, पिता-माता दोनों चल बसे।

लड़का उम्र-लायक हो गया तो उसने व्यापार आदि सब सँभाला। खूब धन था। कुछ समय के बाद पत्नी को बुलाया। संसार (गृहस्थ जीवन) में प्रवेश करने का पहला दिन... गाते-बजाते उत्सव मनाया गया। रात्रि हुई। पति-पत्नी अपने महल के विशाल खंड में आये। केवड़े के फूलों से, इत्र-फुलेल से कमरा महक रहा है। पुष्पों की शय्या आमंत्रित कर रही है। दोनों का शरीर सुडौल था। मानो साक्षात् कामदेव और रति ने उस कमरे में प्रवेश किया ऐसे दोनों पति-पत्नी थे। शरीर तो सुडौल था, आकर्षक था, मुलायम था, सुंदर था लेकिन साथ-साथ में समझ भी कुछ सुंदर थी। पति पलंग पर बैठा, पत्नी पास में बैठी। एकाएक पति की दृष्टि स्वर्ण से मढ़े हुए आईने पर गयी। उस जमाने के कारीगरों ने उस आईने के दोनों किनारों में उसके पिता और माता के चित्र अंकित कर दिये थे। एकटक, बारीकी से देखता गया अपने पिता-माता के चित्र को और टप टप टप आँखों से आँसू बरसने लगे।



बुद्धिमती पत्नी ने देखा कि इतना खुशी का मौका है, संसार में आज पहली बार प्रवेश कर रहे हैं, इतनी सजावट, इतना उत्सव... और ये रो रहे हैं ! पूछा : ''एकाएक क्या हो गया नाथ ?''

बोले : ''ऐसे ही... कोई छोटी-सी बात याद आ गयी जरा, और कोई बात नहीं।'' ऐसा करके बात दबाने की कोशिश की किंतु पत्नी समझदार थी, बोली : ''छोटी-मोटी बात में आप जैसे वीर की आँखों से आँसू बह चलें... ? पतिदेव ! आपका दुःख मेरा दुःख है, आपकी चिंता मेरी चिंता है, आपकी व्याधि मेरी व्याधि है, आपका शोक मेरा शोक है क्योंकि मैं अर्धांगिनी हूँ। मुझसे मत छुपाइये।''

आग्रह करने पर उस युवक ने आँसुओं को पोंछा। फिर उसी आईने की तरफ एकटक निहारा और कहने लगा : ''हे सुभद्रे ! हे प्रिये ! स्वर्ण से मढ़े हुए इस आईने के दोनों किनारों में जो मेरे माता और पिता के चित्र दिखाई देते हैं उनको देख के मेरी आँखें भर आयीं कि जब उन्होंने शादी की होगी और इसी महल में रहे होंगे तो हम लोग जो भोग भोगने की तैयारी कर रहे हैं वे सब भोग उन्होंने भोग लिये होंगे। हम जो ऐश करने का श्रीगणेश कर रहे हैं वे सारे ऐश उन्होंने किये होंगे। अपितु उस वक्त हम लोगों से भी उनके पास धन ज्यादा था, सुविधाएँ ज्यादा थीं, शरीर-बल, सामर्थ्य ज्यादा था तो अधिक भोगा होगा। लेकिन आज दोनों-के-दोनों काल-कराल के किस कोने में लुप्त हो गये पता भी नहीं ! सब भोगे हुए भोग उनके व्यर्थ हो गये।

विश्व और तैजस का भेद

– स्वामी अखंडानंदजी

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि जाग्रत में प्रज्ञा (बुद्धि) बाह्य पदार्थों को विषय बनाती प्रतीत होती है जबकि स्वप्न में प्रज्ञा आंतर पदार्थों को बाह्यवत् विषय बनाती प्रतीत होती है। **उसी क्रम में अब आगे...**)



इन्द्रिय-गोलक★ तो स्वप्न में रहते नहीं, वहाँ केवल वासना है। वहाँ द्रष्टा केवल अपनी वासना को ही देखता है। द्रष्टा की दृष्टि पर वासना का आवरण रहता है। एक जीववाद की दृष्टि से विचार करने पर 'तत्' (ईश्वर) और 'त्वं' (जीव) पदार्थ के मध्य में संसाररूपी आवरण आता है। **यह आवरण विचार न करने के कारण दृष्टि पर है, द्रष्टा पर नहीं है।** रस्सी में साँप की प्रतीति है। हमें यदि रस्सी देखनी है तो रस्सी और नेत्र के बीच जो प्रतीत होता हुआ साँप है उसे विचार के द्वारा हटाना होगा। रस्सी पर तो कोई आवरण है नहीं।

अब यदि रस्सी-उपहित चैतन्य (रस्सी की सीमा में आये हुए चैतन्य) को देखना है तो वह कहाँ दिखेगा ? यदि दिखेगा तो दृश्य, जड़ हो जायेगा। चैतन्य का साक्षात्कार अन्यरूप में नहीं होता, अहंरूप में ही होता है। अतः स्वप्न में जो वासनामयी प्रज्ञा है वह अपनी ही प्रज्ञा है इसलिए स्वप्न का भोक्ता मैं तैजस हूँ।

केवल प्रकाशस्वरूप (चेतन-प्रकाश) में जो भोक्तारूप से रहता है उसे तैजस कहते हैं। असल में, विषयों (स्थूल भोग-पदार्थों) से शून्य प्रकाशस्वरूप प्रज्ञा का नाम तेज है; उस (वासनायुक्त प्रज्ञा) में जो भोक्तारूप से रहता है उसका नाम तैजस है।

विश्व भी प्रज्ञा का भोग है और तैजस भी। जहाँ तक ज्ञान में ज्ञान का अभिमानी (ज्ञाता) और ज्ञान का विषय (ज्ञेय) है वहाँ तक ज्ञान का नाम प्रज्ञा है। प्रज्ञा तो जाग्रत में भी वही है और स्वप्न में भी वही है अन्यथा तो जाग्रत-स्वप्न की स्मृति ही न हो। फिर भी विश्व और तैजस के अंतर का हेतु बहिष्प्रज्ञता और अंतःप्रज्ञता है। विश्व को (जाग्रत में) तैजस के अनुभव (स्वप्न) की स्मृति रहती है किंतु तैजस को (स्वप्न में) विश्व के अनुभव (जाग्रत) की स्मृति उसी प्रकार नहीं रहती। विश्व कार्य का अभिमानी है, तैजस सूक्ष्म कारण का अभिमानी है। विश्व का भोग जाग्रत के स्थूल विषय हैं और तैजस का भोग स्वप्न के सूक्ष्म विषय हैं। असल में प्रज्ञा ही स्थूल, सूक्ष्म होती है, विषय नहीं। वृत्ति ही भोग्य होती है क्योंकि बिना वृत्ति के किसी विषय का बोध नहीं होता। वस्तु का रूप, रंग आदि भोग्य नहीं बनता, रूपाकार, गंधाकार वृत्ति ही भोग्य बनती है।

जब प्रज्ञा ही भोग्य बनती है तो विश्व और तैजस का भेद क्यों ? स्वप्न में वासनामात्र प्रज्ञा है, उसमें स्थूल विषय नहीं हैं। अतः यह जाग्रत के भोग से पृथक् है। इन पृथक् भोगों का भोक्ता मैं तैजस - हिरण्यगर्भ हूँ। यह भोक्ता भी विश्व की तरह प्राज्ञ (प्रज्ञास्वरूप चेतन ज्ञाता) ही है। एक ही शरीर में अवस्था-भेद से भी दो वास्तविक भोक्ता नहीं हो सकते और कर्ता सदैव एक ही होता है।

जाग्रत और स्वप्न दोनों देखने की वृत्तियाँ हैं

★ दिखाई देनेवाले गोलक इन्द्रियों के कार्य करने के स्थान (कार्यालय) हैं। जैसे - रसना-इन्द्रिय जिह्वारूपी गोलक में कार्य करती है।

स्वादिष्ट और स्वास्थ्यप्रद रोटी कैसे बनायें ?

रोज खायी जानेवाली रोटी को और अधिक रुचिकर व गुणकारी बनाने के लिए आटे में तिल, जीरा, अजवायन तथा मेथीदाना आदि मिला सकते हैं ।

इनके गुण :



(१) तिल : यह वात, पित्त व कफ को संतुलित रखता है, भूख तथा बल-बुद्धि को बढ़ाता है । मातृदुग्ध की वृद्धि करता है, थकान, कमजोरी, जोड़ों के दर्द में लाभकारी है ।

मात्रा : २ कटोरी आटे में १ छोटा चम्मच ति ल।

ध्यान दें : बारिश व ठंड के मौसम में अधिक उपयुक्त, ग्रीष्म और शरद ऋतु में कम मात्रा में लें । शाम को सूर्यास्त के बाद तिल का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

(२) मेथीदाना : यह बल-वीर्यवर्धक, वात-कफशामक, भूख बढ़ानेवाला है और गैस, पेट फूलना, अपच, मधुमेह (diabetes) आदि में लाभकारी है । गर्दन एवं कमर के दर्द, संधिवात, आमवात के दर्द में यह विशेष लाभकारी है । प्रसव के बाद इसके सेवन से दूध बढ़ता है तथा शरीर व कमर के दर्द में लाभ होता है ।

मात्रा : २ कटोरी आटे में चौथाई चम्मच या थोड़ा अधिक मेथी पाउडर मिलायें ।

ध्यान दें : बरसात और ठंड के मौसम में उपयुक्त, ग्रीष्म व शरद ऋतु में नहीं लें ।

(३) जीरा : यह भूख व रुचि वर्धक तथा पाचन व बल-वीर्य को बढ़ानेवाला है । यह कफ-वातशामक है । यह अजीर्ण, गैस, पेटदर्द, उलटी, बुखार, त्वचा-रोग एवं रक्त-विकार में लाभदायी है । बच्चों के पाचन-विकारों में यह अधिक हितकारी है ।

मात्रा : २ कटोरी आटे में आधा से एक चम्मच जीरे का पाउडर मिलायें ।

ध्यान दें : बारिश और ठंड के दिनों में विशेष फायदेमंद, शरद व ग्रीष्म ऋतु में कम लें ।

(४) अजवायन : यह पाचन व रुचि बढ़ानेवाली तथा वात-कफशामक है । पेट फूलना, पेट में भारीपन और अपच के कारण होनेवाले अम्लपित्त (hyperacidity) में फायदेमंद है । साथ ही गठिया व जोड़ों के दर्द में उपयोगी है ।

मात्रा : दो कटोरी आटे में आधा चम्मच अजवायन मिलायें ।

ध्यान दें : गर्मी व पित्त की समस्या में कम लें या नहीं लें । बारिश व ठंड के मौसम में विशेष सेवनीय । ❐

सर्दियों में पुष्टि हेतु

खजूर की रोलवाली मिठाई

लाभ : यह बहुत ही स्वादिष्ट, पौष्टिक व स्वास्थ्यप्रद है । यह शरीर के लिए किसी रसायन (टॉनिक) से कम नहीं है । इसके सेवन से रस, रक्त, मांस आदि धातुओं को पोषण मिलता है तथा यह शरीर में खनिज तत्त्वों व विटामिन्स की कमी को दूर करने में सहायक है । विशेषरूप से यह वात-पित्त प्रकृतिवालों के लिए बहुत अच्छी औषधि है ।

विधि : १ कटोरी बीज निकाले मुलायम खजूर* तेल में लुगदी बनने तक सेंकें । खसखस, कद्दूकश किया सूखा नारियल, बीज निकाले मुनक्के, मगजकरी आदि सूखे मेवे (जो भी उपलब्ध हों) - सभीको हलका-सा भून लें ।

ईश्वर के रास्ते चलनेवाले का ऐहिक काम बिगड़ता नहीं

(आजकल के गतिमान युग में गौण उद्देश्य और मुख्य उद्देश्य में तालमेल कैसे बैठायें, जानते हैं पूज्य बापूजी की अमृतवाणी द्वारा)

साधक : हमारा ब्रह्मज्ञान का उद्देश्य है लेकिन दैनिक जीवन में सांसारिक गौण उद्देश्य (जैसे – पढ़ाई करना, कमाना-खिलाना) को भी पूरा करना पड़ता है। तो हमारी वृत्ति यदि गौण उद्देश्य में ही लग जाय तो क्या करें ?

पूज्य बापूजी : देखो, गौण उद्देश्य को छोड़ना नहीं है और उसमें डूबना भी नहीं है। गौण उद्देश्य में डूबोगे तो उसमें भी खास बरकत नहीं आयेगी और ऊँचे उद्देश्य में लगोगे तो गौण उद्देश्य भी सहज में ही पूरा हो जायेगा। संत तुकारामजी की शादी हुई तो गौण उद्देश्य (गौण कर्तव्य) था कमाकर पत्नी को खिलाना-पिलाना किंतु वे ईश्वर को पाने के ऊँचे उद्देश्य (मुख्य कर्तव्य) में लग गये। पहाड़ पर जाकर भजन करने लगे तो जिजाई (तुकारामजी की पत्नी) अपनी मेहनत से कमा के भोजन बना के उनके लिए ले जाती थी और विट्ठल को कोसती थी। एक बार विट्ठल को कोसते-कोसते पहाड़ पर जा रही थी तो पैर में बड़ा-सा काँटा घुस गया। वह वहीं बैठ के विट्ठल को कोसने लगी कि 'मेरे पति को रंग लगा है, वह पागलों की नाईं विट्ठल-विट्ठल करता है और मुझे इतना बड़ा काँटा लगा है...'



भगवान विट्ठल प्रकट हो गये। वह उनसे रूठी हुई थी तो मुँह घुमा लिया। इधर-उधर जहाँ भी मुँह करती उसे विट्ठल-ही-विट्ठल दिखने लगे। आखिर भगवान ने सोचा कि यह भले मेरे को कोसे किंतु है तो भक्त की सेविका। विट्ठल का हृदय तो विट्ठल ही है। उसके पैर का काँटा उन्होंने ही खींच के निकाला, जरा-सी कुछ कृपा की तो उसे आराम मिला। अब तुकारामजी का भोजन लिये हुए वह जा रही है और विट्ठल भी उसके साथ जा रहे हैं। तुकारामजी देखते हैं कि ''अमावस्या की रात और पूर्णिमा का चाँद एक साथ... यह क्या है !'' चकित हो गये।

तो ऊँचा उद्देश्य निभाने में छोटे-मोटे उद्देश्य भी निभ जाते हैं; नहीं तो भगवान की सत्ता और भगवान की चेतना उन्हें निभाती है। नरसिंह मेहता भी अपने जीवन में गौण उद्देश्य की तरफ ध्यान नहीं देते थे तो उनकी हुंडी स्वीकारने के लिए ठाकुरजी सेठ बन के आते हैं। और हम भी इस ऊँचे उद्देश्य के पीछे चले तो हमारा छोटा उद्देश्य कौन-सा बिगड़ा ! छोटे उद्देश्य से छलाँग मारी ऊँचे उद्देश्य की तरफ। छोटा उद्देश्य तो था एक शक्कर की दुकान सँभालने का, उसमें जो मिला उससे तो ऊब के चले गये विवेक से जग के और ऊँचे उद्देश्य में मारी छलाँग ! दुल्हन लाये तो उसको कमा के खिलाना चाहिए... अब कई जन्मों में दुल्हन और दूल्हे हुए, देख लिया। भाई की प्रार्थना, यह-वह मान के कर लिया, आखिर क्या है ? चल पड़े ऊँचे उद्देश्य के लिए। फिर गुरुद्वार पर गये, वहाँ भी ऐसे कुछ पुराने लोग थे जो नहीं चाहते थे कि हम आगे बढ़ जायें तो वहाँ अवरोध होता था फिर भी हम डटे रहे। हम ऊँचे उद्देश्य में लगे रहे तो जो छोटा उद्देश्य था उससे हजार गुना बड़ा होकर अभी चल रहा है। एक दुकान सँभालने में तो पसीना निकल जाता था अभी तो सैकड़ों आश्रम हैं, गुरुकुल अलग, गौशालाएँ अलग और

संसार की ओर मन अपने-आप जाता है, पुरानी आदत है। ईश्वर की ओर जाना हो तो 'ईश्वर की ओर' पुस्तक बार-बार पढ़ो, तुम्हारे मन में विवेक-वैराग्य जागृत होगा। 'श्री योगवासिष्ठ' का प्रथम भाग भी विवेक-वैराग्य जगानेवाला है। - पूज्य बापूजी

विवेक, वैराग्य आदि साधन-सम्पत्ति से सम्पन्न बनानेवाला सत्साहित्य

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य !
पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !



सर्दियों हेतु बल-पुष्टिदायी विशेष उत्पाद

स्पेशल च्यवनप्राश, ब्राह्म रसायन, रजत मालती टेबलेट, अश्वगंधा चूर्ण, अश्वगंधा पाक, सौभाग्य-शुंठी पाक

किमिया खजूर



₹ १७० लगभग ५५० ग्रा. | ₹ ३०० १ कि.ग्रा. | ₹ ६०० ५०० ग्रा. | ₹ १२० ४० टेबलेट | ₹ ६० ७५ ग्रा. | ₹ २७५ ४५० ग्रा. | ₹ २७५ ४५० ग्रा.

सब्जी, अनाज, गन्ना, फल - सभी फसलों तथा बाग-बगीचे, औषधीय व घरेलू पौधों, फूलों के लिए उपयुक्त

गौ-सेवा केंचुआ खाद



₹ ७० ५ कि.ग्रा.

५० कि.ग्रा. की बोरी में भी उपलब्ध

✲ रासायनिक खाद से ऊसर बनी मिट्टी के लिए जैविक उर्वरक ✲ दानों में चमक व अधिक उत्पादन ✲ फसल की जैविक गुणवत्ता में वृद्धि ✲ फसलों की रोगप्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी ✲ पानी व रासायनिक खाद की बचत ✲ जड़ों व पौधों का सुदृढ़ विकास



बालों के उत्तम संरक्षण हेतु

केश सुरक्षा आयुर्वेदिक शैम्पू | **घृतकुमारी** (Aloe vera) शैम्पू

✲ बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी। ✲ बालों को मुलायम, काले, मजबूत, लम्बे, घने तथा चमकदार बनाने में सहायक। ✲ घुँघराले बालों की अति ऐंठन को कम करने में असरकारक।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५९१९३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

पितरों की सद्गति तथा प्राणिमात्र के मंगल हेतु आश्रमों में किये गये सामूहिक श्राद्ध कार्यक्रम

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Nov 2026


अहमदाबाद


सूरत


लखनऊ


भैरवी (गुज.)

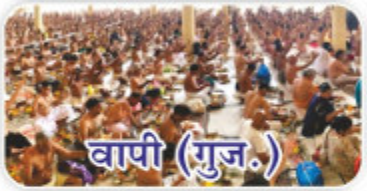

बेंगलुरु


रजोकरी-दिल्ली


हैदराबाद


पटना


रायपुर (छ.ग.)


वापी (गुज.)


बेलौदी, जि. दुर्ग (छ.ग.)


भोपाल


गोंदिया (महा.)


बेमेतरा (छ.ग.)


फरीदाबाद


राजनांदगाँव (छ.ग.)


वाराणसी


लुधियाना


जयपुर


पंचेड़, जि. रतलाम (म.प्र.)


जम्मू


भुसावल (महा.)


अनगुल (ओड़िशा)


चंडीगढ़


जमशेदपुर


धौली-भुवनेश्वर


ब्रिस्बेन (ऑस्ट्रेलिया)

ऋषियों के ज्ञान को घर-घर पहुँचाने का संकल्प लेते पुण्यात्मा


देहरादून



चंडीगढ़


लुधियाना


बरेली (उ.प्र.)


सोलन (हि.प्र.)


कठुआ (जम्मू)


वलसाड (गुज.)


पिपरिया (म.प्र.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad ऋषि प्रसाद Rishi Darshan ऋषि दर्शन Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी